कथा सदियों पुरानी

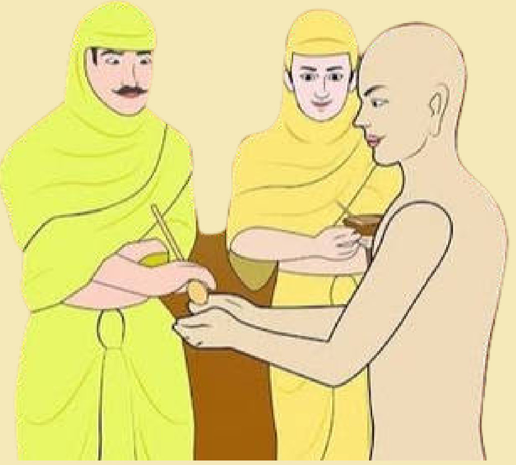
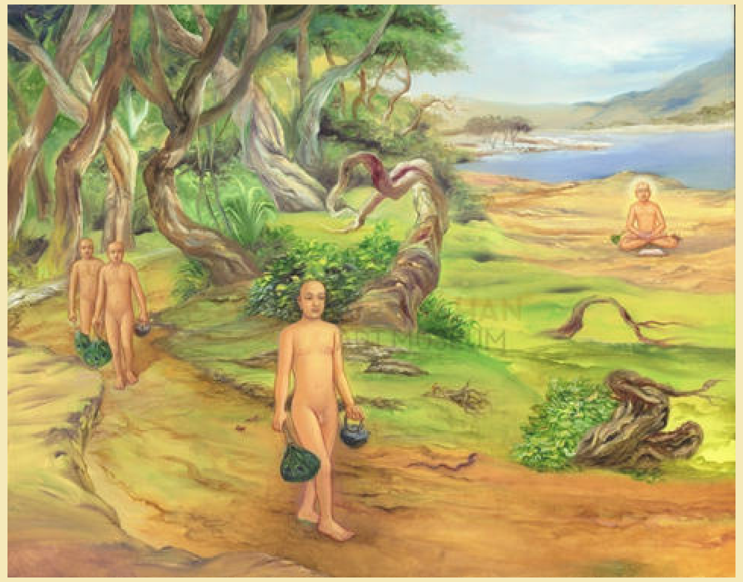

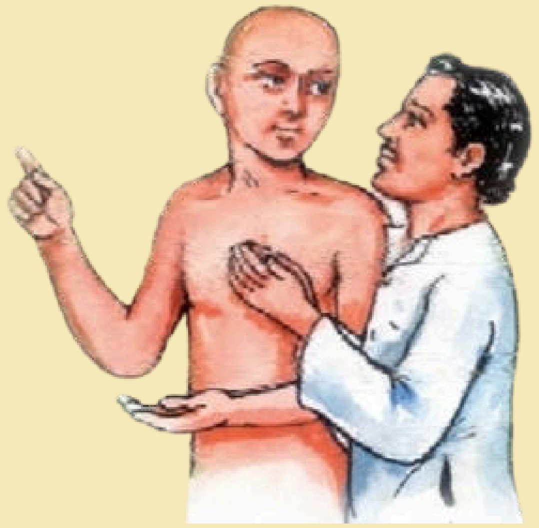

जैन पाठशाला

॥ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः॥

JAIN PATHSHALA

निदेशक - डॉ.बी.सी. जैन

किसने किससे कहा ?

हे सिंहराज! खाना हो तो ये जलेबियाँ खाओ और अगर मांस ही खाना है तो मुझे खा लो...

किसने किससे कहा ?

अरे! निंदा सुनकर मेरी, नाथ त्यागा तुमने मुझको,
धर्म की सुनकर निंदा कभी, छोड़ मत देना तुम
उसको...

किसने किससे कहा ?

हे माता! हे पिता! मैं आपकी आज्ञा का उल्लघन तो नहीं कर सकता अतः मैं उन चारो कन्यायों से विवाह करने को तैयार हूँ परन्तु मैं विवाह के अगले दिन ही दीक्षा लूँगा यह भी निश्चित है...

किसने किससे कहा ?

पिताजी!

कौन किसे आधार जगत में, सब अपने आधार।
पर को जो आधार मान ले, वह मूरख सरदार।।

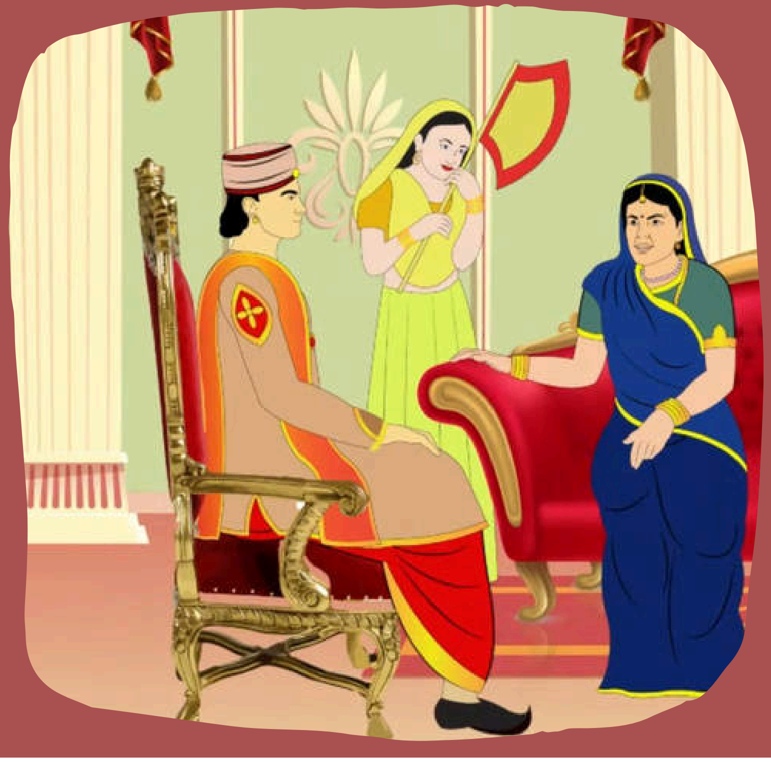

किसने किससे कहा ?

नहीं, नहीं... भले ही कितना भी धन मिले, चाहे राजकुमार ही क्यों न हो... मैं इस अष्टानिका पर्व में किसी भी जीव को नहीं मारूँगा...

किसने किससे कहा ?

हे विज्ञपुरुष मेरे कुछ प्रश्नों के, उत्तर तुम बतलाओ
तत्त्व – पदार्थ और अस्तिकाय का, अब स्वरूप तुम समझाओं?
तुम रहने दो है अज्ञ पुरूष क्या तुमको मैं समझाऊ चलो तुम्हारे
गुरुवर समीप मैं उनको सब कुछ बतलाऊ...

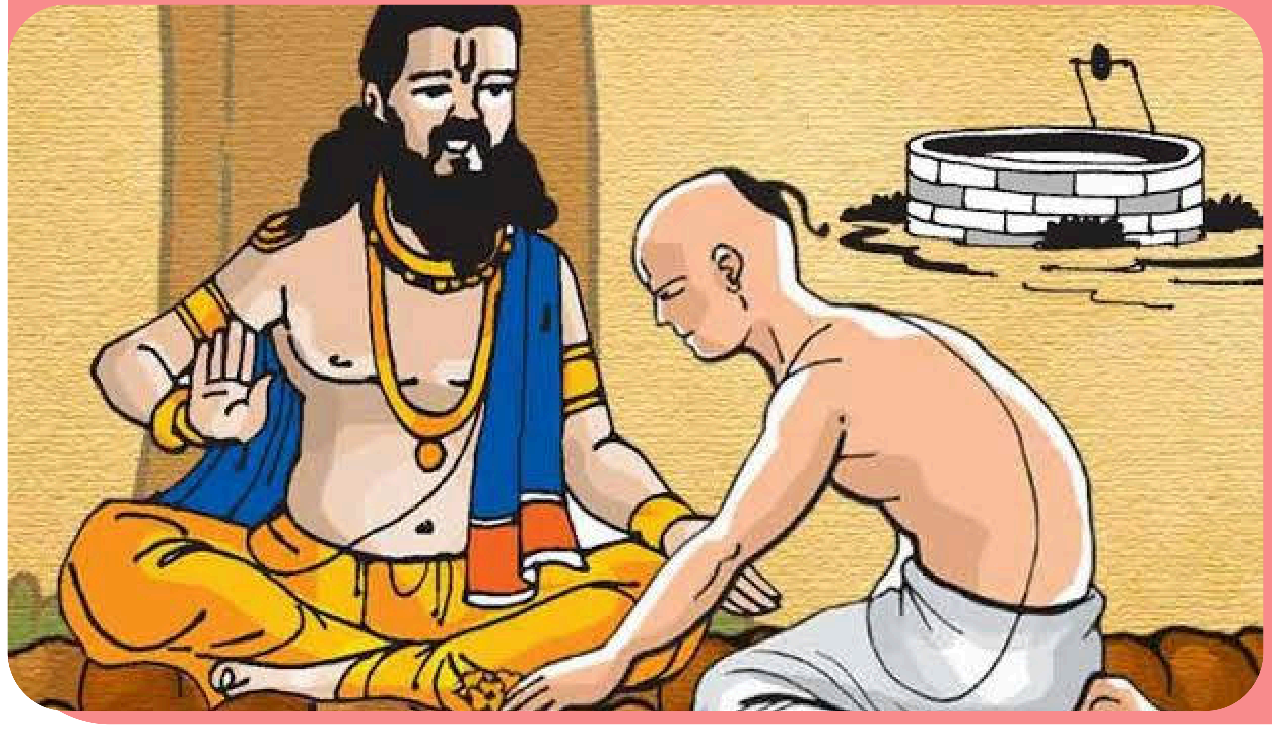

किसने किससे कहा ?

हे मृगराज! अपने स्वभाव को भूल कर क्यों इस निर्बल पशु के प्राण लेने जा रहे हो...

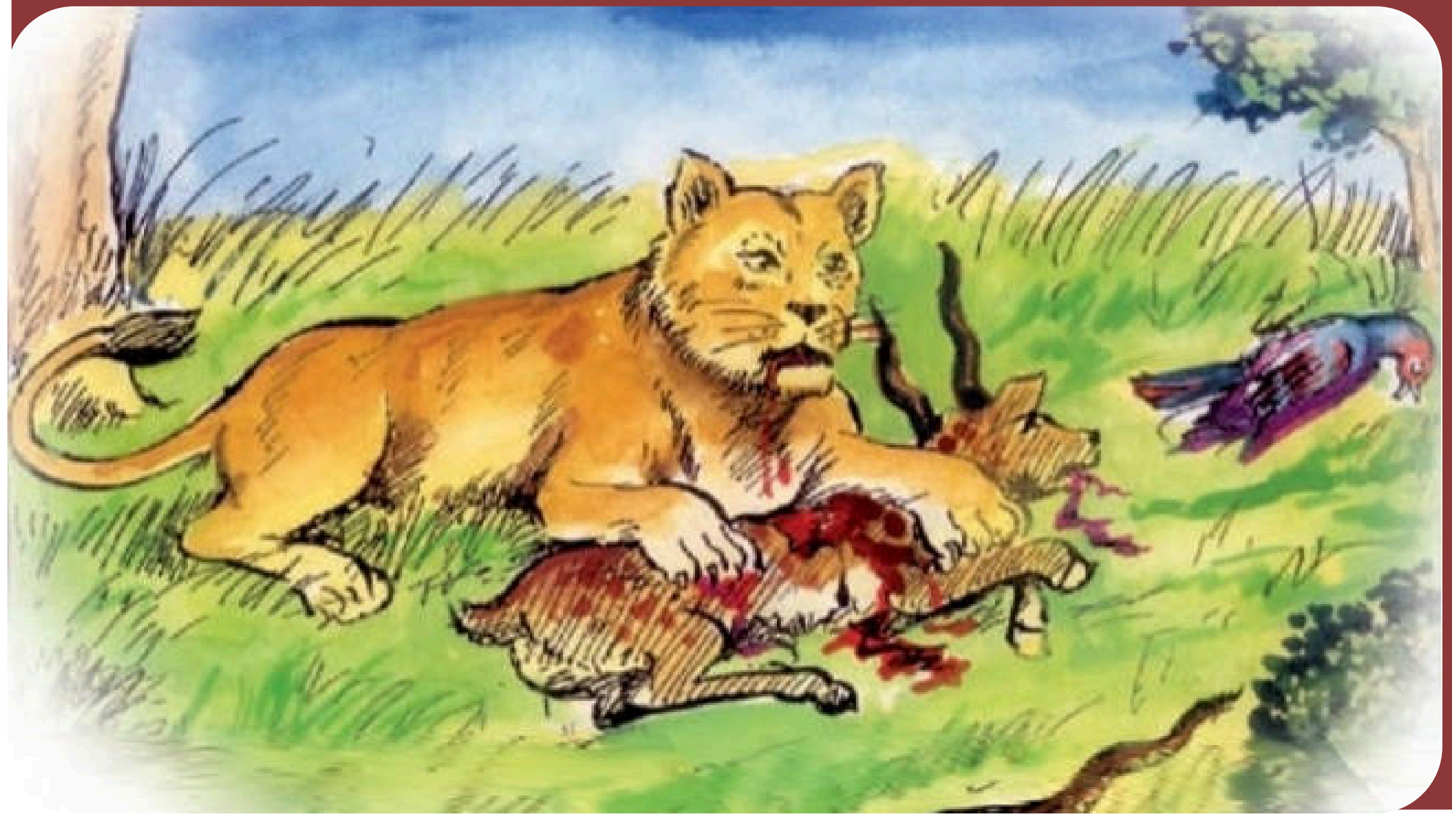

किसने किससे कहा ?

दिगम्बर संत उपसर्गों से घबराते नहीं हैं, वे तो अपनी आत्मा में लीन हो जाते हैं, अगर वे सच्चे संत होंगे तो वही ध्यान में लीन होंगे...

किसने किससे कहा ?

हे पुत्री! तुम क्यों दु:खी होती हो, मैं तुम्हारे लिए उनसे भी अच्छा वर ढूंढ कर लाऊंगा...

किसने किससे कहा ?

वन में पत्थर, वन में कंकड़,
वन में सिंह विकराल... बेटा हठ तजो...
माता मोह तजो...

किसने किससे कहा ?

कैसे मूर्ख दोनों कुमार ये, एक ही कन्या पर रीझ गए।
सगी बहन का जान के रिश्ता, मुक्तिमार्ग अनुरागी भए।।

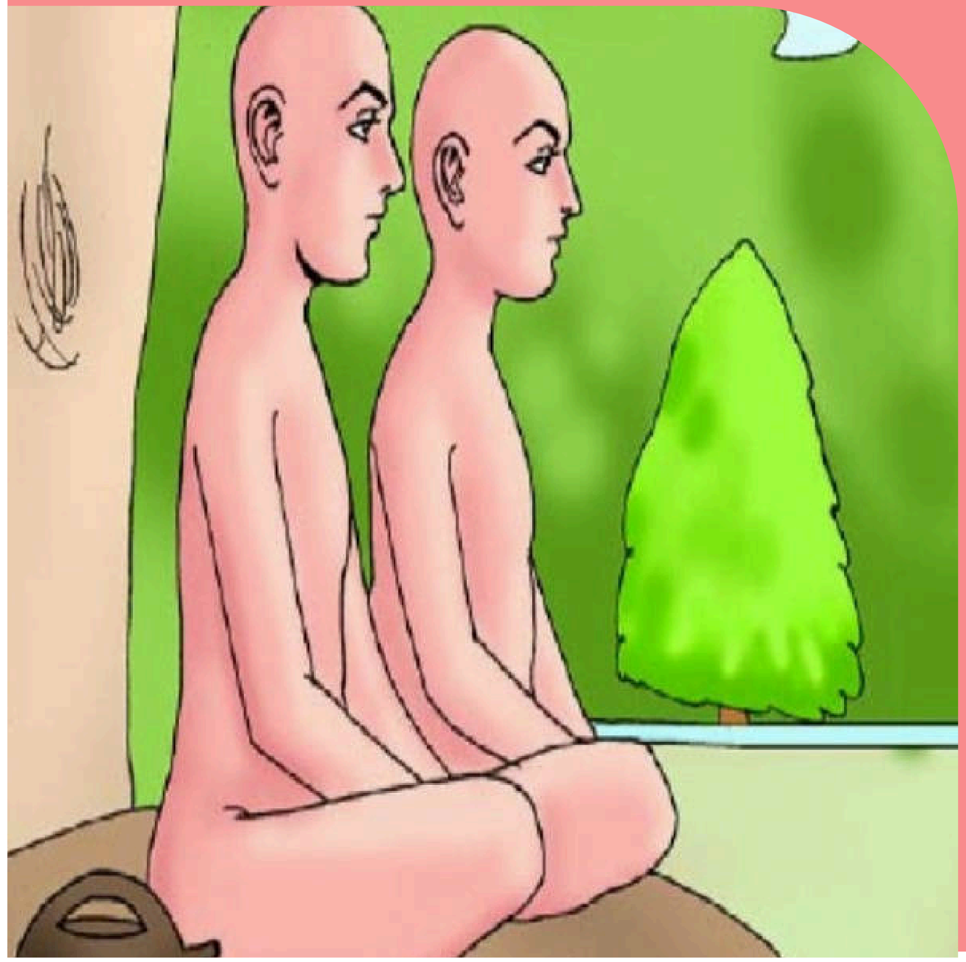

किसने किससे कहा ?

हे पिताजी! मैंने सात कदम से अधिक बाहर न जाने की प्रतिज्ञा लेकर समाधिमरण ले लिया है। इसलिए आप क्यों इस अजगर को मारकर पंचेंद्रिय जीव की हिंसा का पाप करते हो...

किसने किससे कहा ?

अरे! तुम लोग यह क्या कर रहे हो? यह कोई चोर नहीं, यह तो धर्मात्मा है। नीलम मणि लाने के लिए मैंने ही इसे कहा था...

किसने किससे कहा ?

हे महाराज! इस पंचम काल में तीर्थंकर कैसे? भरत क्षेत्र में एक कालखण्ड में 24 तीर्थंकर होने का ही विधान है, जो कि मोक्ष जा चुके हैं। अब 25वें तीर्थंकर कैसे? यह अवश्य किसी कपटी का मायाजाल है...

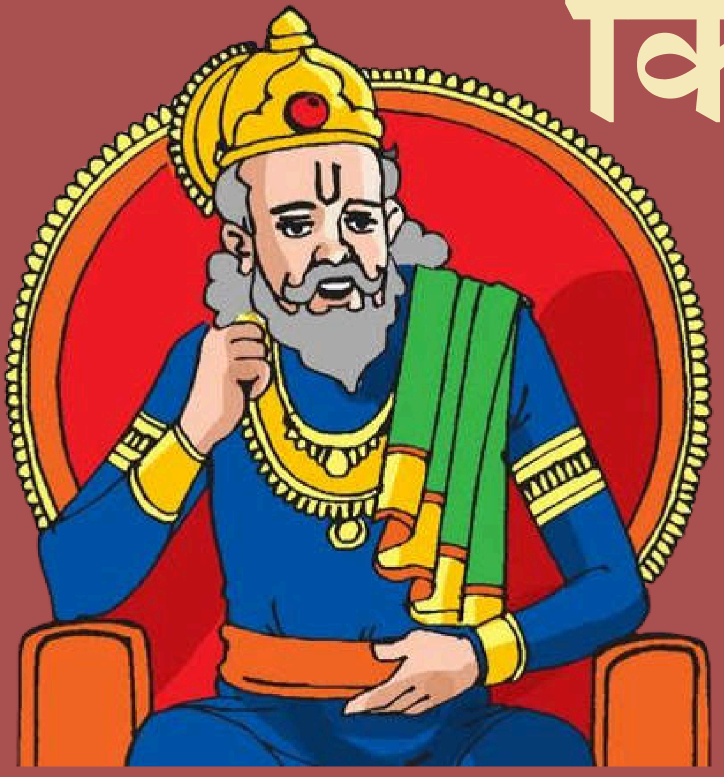

किसने किससे कहा ?

अरे! ये इलायची के दाने के बराबर मनुष्य के आकार जैसा प्राणी कौन है और कहां से आया है?

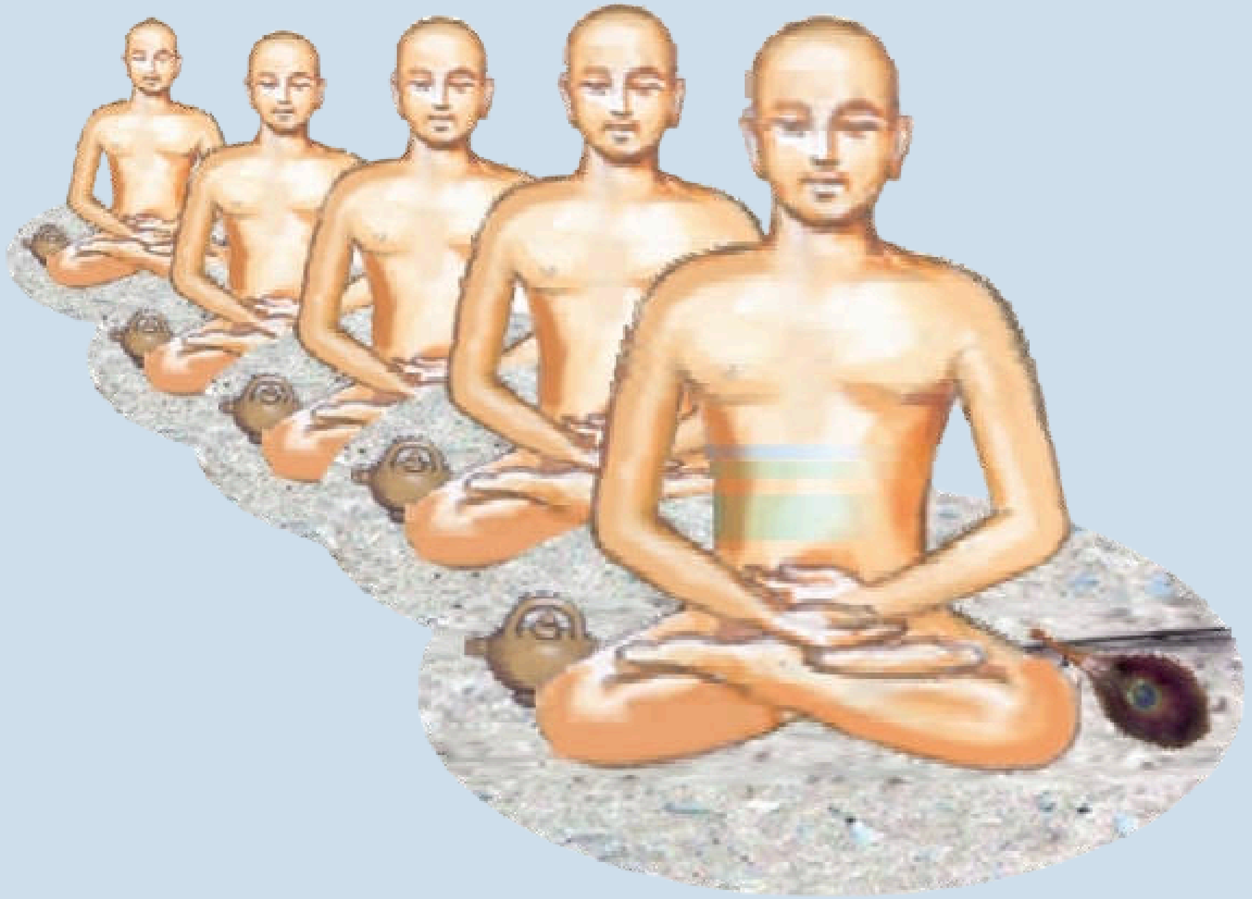

उत्तरमालिका

1. दीवान अमरचंदजी - शेर से
2. सती सीताजी - सेनापति से
3. जंबूकुमार - माता-पिता से
4. सती मैनासुंदरी - पिता से
5. यमपाल चांडाल - राजा से
6. इन्द्र - इंद्रभूति गौतम
7. संजय-विजय मुनि - महावीर जीव
8. रानी चेलना - राजा श्रेणिक
9. राजुल के पिता - राजुल से
10. कुंदकुंद की माता - कुंदकुंद
11. कुलभूषण - देशभूषण
12. अनंगसरा - पिता से
13. जिनभक्त सेठ - सिपाहियों से
14. रेवती रानी - विद्याधर राजा
15. सीमंधर समवशरण में अन्य मुनि - सीमंधर भगवान से शंका

जय जिनेन्द्र

www.jainpathshalajaipur.com

Youtube: Jain Pathshala Jaipur

E-mail: jainpathshalajaipur@gmail.com

Phone : 0141-3567401, 8619804009, 8955872717

विशेष सहयोग - समकित शास्त्री - 9057185893